संवेदना की नजर

कला

वर्षा दास

पाब्लो बार्थोलोमियो के पास सत्रह हजार नेगेटिव्ज का एक समृद्ध खजाना है। यह खजाना है उनके पिता रिचर्ड बार्थोलोमियो की खींची हुई तस्वीरों का। रिचर्ड अत्यंत संवेदनशील कला समीक्षक, कवि, फोटोग्राफर, चित्रकार और लेखक थे। बहुत कम उम्र, अभी तो साठ के भी नहीं हुए थे, 11 जनवरी, 1985 को वे हमारे बीच से चले गए। आज अगर वे जीवित होते तो 82 वर्ष के होते और कलाकारों के बीच बैठ कर गंभीर चर्चा में मग्न रहते, जैसा तब किया करते थे।

साठ, सत्तर और अस्सी के दशक की यादों को ताजा करती हुई रिचर्ड की श्वेत-श्याम तस्वीरों की प्रदर्शनी इन दिनों फोटोइंक की कलादीर्घा में चल रही है। इस प्रदर्शनी में कुल अस्सी तस्वीरें प्रदर्शित की गई हैं, जिनका चयन पाब्लो ने किया है। चूंकि रिचर्ड कला सौंदर्य के ज्ञाता थे, कलाकार थे, मानव-प्रेमी थे- ये तीनों आयाम उनकी तस्वीरों में पाए जाते हैं। इस प्रदर्शनी का शीर्षक है, 'एक समीक्षक की आंख', लेकिन इसके साथ एक और विशेषण जोड़ना होगा- 'एक सहृदयी समीक्षक की आंख।' दिल और दक्षता, सूझ और सौंदर्य, इन तस्वीरों में सूक्ष्मता और सौम्यता से अभिव्यक्त हो रहे हैं।

पाब्लो ने जिन तस्वीरों का चयन किया है, उनमें बार्थोलोमियो परिवार की तस्वीरें हैं। अत्यंत व्यक्तिगत क्षणों को रिचर्ड ने कैमेरे में बंदी बना लिया था।

दीर्घा में प्रवेश करते ही बाईं ओर पहली तस्वीर है उस कमरे के उस कोने की, जहां रिचर्ड चित्रकारी किया करते थे। रिचर्ड की जीवनी का संक्षिप्त वर्णन देखा जाए तो उन्होंने सेंट स्टीफंस कॉलेज में अंग्रेजी विषय लेकर एमए किया था और फिर मॉडर्न स्कूल में शिक्षक की नौकरी की। उस समय की दिल्ली से प्रकाशित दो महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं 'थॉट' और 'वाक' में सहायक संपादक के रूप में कार्यरत रहे और फिर स्टेट्समैन अखबार से जुड़े। इसमें कला के प्रशिक्षण की बात कहीं नहीं है। 1958 से रिचर्ड इंडियन एक्सप्रेस अखबार में एक कला समीक्षक के रूप में लिखने लगे और तब से जीवन के अंतिम क्षण तक वे कला में ही ओतप्रोत रहे। लेकिन ऊपर जिस तस्वीर का उल्लेख किया गया है वह 1957 में अल्मोड़ा में खींची गई है। उसका शीर्षक है 'ग्रीष्मकालीन स्टूडियो'। कमरे के उस कोने में एक छोटी सी मेज है, जिस पर रंगों के ट्यूब, छोटी बोतल में तेल और तूलिकाएं हैं। उसी मेज पर दीवार के सहारे एक कैनवास टिका है। कैनवास पर एक अधूरा चित्र है। काली रेखाओं से चित्र का प्रारूप तो बना हुआ है, लेकिन उसमें रंग और प्राण भरे हैं। केवल ऊपर के आधे हिस्से में दो निर्वसन युवतियों का सिर से कमर तक का चित्र है। इस अधूरे चित्र की संरचना देख कर लगता है कि यह किसी प्रशिक्षित कलाकार की रचना है। कुर्सी खाली है। टेढ़ी है। पास की खिड़कियों से प्रकाश आ रहा है।

रिचर्ड बार्थोलोमियो की खींची चित्रकार रामकुमार की तस्वीर

इस तस्वीर की बगल में भी यही दृश्य है। फर्क इतना है कि कुर्सी पर कलाकार रिचर्ड उपस्थित है। दीवार से टिका हुआ कैनवास दूसरा है, पूरे रंगीन चित्र से भरा हुआ। तीसरी तस्वीर में रिचर्ड लेखक-समीक्षक के रूप में हैं। टेबिल पर टाइपराइटर है। एक हाथ की उंगलियों में धुआं निकालती सिगरेट है तो दूसरे हाथ की उंगली टाइपराइटर पर। पास में कागज और कलम है और लेखक विचारमग्न।

चौथी तस्वीर 1957 में अल्मोड़ा में खींची है। तस्वीर का आधा हिस्सा आकाश है और आधा धरती। एक खाली जगह में घास के ऊपर रिचर्ड अपने परिवार के साथ हैं। बगल से एक रास्ता दूर तक जा रहा है। वहां रिचर्ड खड़े हैं, मस्तक मानो आसमान को छू रहा है और पैर जमीन पर। पास में उनकी पत्नी रति और बेटा पाब्लो बैठे हैं।

पारिवारिक तस्वीरों में एक तस्वीर ध्यान आकृष्ट करती है। उसमें सफेद साड़ी पहने रति खड़ी हैं। पीछे दीवार पर दाईं ओर अंधेरा है और बाईं ओर प्रकाश। इसी तरह रति के आधे चेहरे पर प्रकाश है तो आधे पर अंधकार। वे अपने दाएं हाथ से कंधे पर साड़ी का पल्लू डाल रही हैं। वह पल्लू हवा में उड़ रहा है। काली दीवार के सामने उड़ता हुआ लचीला सफेद आकार, प्रकाश और अंधकार की लीला और नारी की सहज क्रिया। एक 'एस्थेटिक' अनुभव।

जो लोग साठ और सत्तर के दशक में दिल्ली में रहते थे और कला जगत से जुड़े हुए थे, उनके लिए इस प्रदर्शनी की कई तस्वीरें भावुकता के सागर में डुबकियां लगाने जैसी हैं। जैसे कि एक दृश्य है शामी मेहदीरत्ता की गैलरी चाणक्य का। जीआर संतोष के चित्र दीवार पर हैं, उन चित्रों के नीचे चौकी पर संतोष, केशव मलिक और प्रयाग शुक्ल बैठे हैं, फर्श पर बैठे हैं एसए कृष्णन और मेहदीरत्ता और कुर्सी पर हैं भूषण। इनमें से भूषण, कृष्णन और संतोष अब नहीं रहे, मेहदीरत्ता विदेश में जा बसे हैं और केशव मलिक और प्रयाग शुक्ल अब भी कला पर लिख रहे हैं। गैलरी का यह अनौपचारिक वातावरण, कला-समीक्षकों और कलाकारों के बीच बहस, हंसी, उनकी आपसी घनिष्ठता आज शायद ही कहीं देखने को मिलती है।

इस प्रदर्शनी में देश-विदेश के दृश्यचित्र भी हैं। न्यूयार्क की गंदगी और गरीबी है तो दार्जिलिंग और दिल्ली की गलियां हैं। इन सबके बीच फोटोग्राफर ने अपने दोनों पुत्र पाब्लो और रोबिन की भी कई तस्वीरें खींची हैं। प्रत्येक में उनके जीवन के प्रत्येक पड़ाव में उदासी और दिशाशून्यता का आभास होता है। शायद जाने-अनजाने में रिचर्ड का निजी जीवन इन तस्वीरों के माध्यम से एक खुली किताब की तरह दर्शक के सामने आ जाता है।

इस प्रदर्शनी के अवसर पर या यों कहें कि रिचर्ड की चौबीसवीं पुण्यतिथि पर 'चटर्जी ऐंड लाल', 'फोटोइंक' और 'सिपिया इंटरनेशनल' ने एक अमूल्य पुस्तक का प्रकाशन किया है। इसी प्रदर्शनी की तस्वीरें उसमें शामिल हैं और अंतिम पृष्ठों में पाब्लो का एक आलेख उनके मन और जीवन की कई बातों को इस प्रकार सामने रख देता है कि पढ़ने वाले के दिल को छू जाता है। रिचर्ड का मानवीय पक्ष पाब्लो ने शायद विरासत में पाया है। इसी लिए प्रदर्शनी की तस्वीरें और पाब्लो का चयन और शब्द मानो एक दिल से दूसरे दिल तक का नीरव, सहज, स्वाभाविक संप्रेषण है।

यह प्रदर्शनी 28 फरवरी तक चलेगी।